भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी कार्यपत्रिका -साखी (कबीर)-1

पाठः साखी (कबीर)-1	कार्यपत्रिका की तिथिः ----------
संसाधन व्यक्तिः श्रीमती बीना स्टिफन	तिथिः----------
विद्यार्थी का नाम :----------	कक्षा : X ब

प्रश्नोत्तर

प्र1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है ?

उ1. मीठी वाणी बोलने से सुननेवाले के मन को सुख मिलता है और अपने को शीतलता(शांति) मिलती है अर्थात किसी के साथ मधुर शब्दों में बोलकर आत्मसंतोष प्राप्त होता है । इसके विपरीत अगर किसी के साथ कटु शब्दों में बोलते हैं तो स्वयं का मन भी दुखी रहता है ।

प्र2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।

उ2. दीपक जहाँ भी रखा होता है, उसका प्रकाश अंधकार को नष्ट कर देता है। उसी प्रकार जब हृदय में ज्ञान रूपी दीपक जल जाता है तो अज्ञान रूपी अंधकार नष्ट हो जाता है ।

प्र3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उ3. ईश्वर संसार के कण-कण में बसा हुआ है परंतु हम अज्ञान के कारण, संसार के झूठे आकर्षण तथा मोह आदि के कारण उसे अनुभव नहीं कर पाते ।

प्र4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं ?इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए ।

उ4. संसार में स्वार्थी लोग ही सुखी हैं और दूसरों की चिंता करनेवाले दुखी हैं । 'सोना' का आशय है - प्रभु के प्रति उदासीन होना । 'जागना' का आशय

है- प्रभु के प्रति लगनशील और आस्थावान होना ।कवि ने भगवान के प्रति उदासीन संसारी लोगों के सुखों को व्यर्थ बताने के लिए उन्हें सोया हुआ बताया है ।प्रभु-भक्तों की तड़प में भी जीवन है, जागरण है -यह बताया है।

प्र5. अपने स्वभान को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उ5. कबीर की सलाह है कि ऐसे व्यक्ति को हमेशा अपने आस-पास रखो जो आपकी कमियों और कमज़ोरियों पर उँगली उठाता हो । आपके आचरण में जो दोष हो, उनकी ओर इशारा करता हो ।जो आपकी बुराइयाँ गिनाता चलता हो । ऐसा व्यक्ति आपको अपनी उन खराबियों को अपने से दूर करने का अवसर देता है, जो आपको पता भी नहीं होती । उसकी टोका-टोकी से आपको उनमें सुधार का अवसर मिलता है ।इस तरह आपके मन का मैल दूर होता जाता है ।

प्र6. 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ' - इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं ?

उ6. बहुत सारी पुस्तकों से केवल शास्त्रीय ज्ञान पाकर कोई पंडित नहीं हो जाता। पंडित तो वही हो पाता है जो प्रेम करना सीख लेता है । यदि एक अक्षर पीव(प्रियतम/ईश्वर)का कोई पढ़ ले तो वह पंडित हो जाता है अर्थात अपने प्रिय ईश्वर से प्रेम करने का अनुभव जिसे हो जाए वह सचमुच पंडित हो जाता है ।